प्रातः क्लास 2/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। बाप भी, मात-पिता भी है। तुम गाते थे ना तुम मात-पिता हम बालक तेरे, सभी पुकारते रहते हैं। किसको पुकारते हैं? परमपिता परमात्मा को। बाकी उनको समझ में नहीं आता है कि कृपा से सुख घनेरे कौन सी मिलती है और कब मिलती है। सुख घनेरे किसको कहा जाता है वह भी नहीं समझते। अभी तुम यहाँ सामने बैठे हो। जानते हो यहाँ कितने दुख घनेरे हैं। यह है दुखधाम। वह है सुखधाम। किसकी बुद्धि में नहीं आता कि हम 21 जन्म स्वर्ग में बहुत सुखी रहते हैं। तुमको भी पहले यह अनुभव नहीं था। अभी तुम समझते हो हम उस परमपिता परमात्मा को(के) मात-पिता के सामने बैठे हैं। जानते हो 21 जन्मों के लिए स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करने लिए आये हैं। बाप को जान लिया और बाप द्वारा सारी सृष्टि के चक्र को भी समझ लिया है। हम पहले सुख घनेरे में थे। फिर दुख में आये हैं। यह भी नम्बरवार हरेक को बुद्धि रहता है। स्टुडेन्ट्स को तो सदैव याद रहना चाहिए; परंतु बाबा देखते हैं घड़ी-2 भूल जाते हैं। इसलिए फिर मुरझा जाते हैं। छुईमुई स्टुडेंट हो जाते हैं। माया वार कर लेती है। वह जो खुशी होनी चाहिए वह नहीं रहती है। नम्बरवार पद है ना। स्वर्ग में तो जाते हैं; परंतु वहाँ भी राजा से लेकर रंक तक रहते हैं। वह गरीब प्रजा, वह साहूकार। स्वर्ग में भी ऐसे हैं, तो नर्क में भी हैं। ऊँच और नीच। अभी तुम बच्चे जानते हो पुरुषार्थ करते हैं सुख घनेरे पाने लिए। इन (ल॰ना॰) को सभी से जास्ती सुख घनेरे है ना। मुख्य है पवित्रता की बात। पवित्रता के बिगर पीस प्रॉप्र्टी मिल नहीं सकता। इसमें चलन बहुत अच्छी चाहिए। मनुष्य की चलन सुधरती है पवित्रता से। पवित्र हैं तो उनको देवता कहा जाता है। तुम यहाँ आये ही हो देवता बनने लिए। वह देवताएँ सदा सुखी थे। मनुष्य को तो सदा सुख हो न सके। सुख होता ही है देवताओं को। इन देवताओं के ही तुम पूजा करते थे ना; क्योंकि पवित्र थे। सारा मदार है पवित्रता पर। विघ्न भी इसमें ही पड़ती है। चाहते हैं दुनिया में पीस हो। बाप कहेंगे सिवाय पवित्रता के शांति कब हो न सके। पहले-2 मुख्य है ही पवित्रता की बात। पवित्रता से ही सुधरे हुये चलन होते हैं। पतित होने से तो और ही चलन बिगड़ती है। समझना चाहिए अभी हमको फिर से देवता बनना है। तो पवित्रता ज़रूर चाहिए। देवताएँ पवित्र हैं, तब तो अपवित्र मनुष्य उन्हों के आगे माथा टेकते हैं। मुख्य बात है पवित्रता की। पुकारते भी ऐसे हैं हे पतित-पावन आकर पावन बनाओ। बाप कहते हैं काम महाशत्रु हैं इन पर जीत पहनो। इन पर जीत पाने से तुम पवित्र बनेंगे। तुम जब पवित्र सतोप्रधान थे तो शांति भी थी, सुख भी था। अभी तुम बच्चों को याद आई है ना। कल की बात है। तुम पवित्र थे तो अथाह सुख-सम्पत्ति, शांति सभी कुछ था। अभी फिर तुमको यह बनना है। इसमें पहले मुख्य बात है सम्पूर्ण निर्विकारी बनना। यह तो गायन है, यह है ज्ञान यज्ञ। इसमें विघ्न तो ज़रूर पड़ेंगे। पवित्रता के ऊपर ही तंग करते हैं। आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय भी गाये हुये हैं। तुम्हारी बुद्धि में है सतयुग में यह देवताएँ थे। भल सूरतें तो मनुष्य की हैं; परंतु उन्हों को देवता कहा (जा)ता है। वहाँ है सम्पूर्ण सतोप्रधान। हर चीज़ परफेक्ट होती है। बाप परफेक्ट है तो बच्चों को भी परफेक्ट बनाते हैं। योगबल से तुम कितने पवित्र ब्युटीफुल बनते हो। यह मुसाफिर तो एवर गोरा है, जो तुमको भी सांवरा से गोरा बनाते हैं। तुम जानते हो हम हर 5000 वर्ष बाद सांवरे बनते हैं। फिर बाप आकर गोरा बनाते हैं। वहाँ तो है ही गोरे। नेचरल ब्युटी होती है। सुंदर बनाने की दरकार ही नहीं रहती। सतोप्रधान होते ही है सुंदर। वही फिर तमोप्रधान होने से काले हो पड़ते हैं, नाम ही है श्याम और सुंदर। कृष्ण को श्याम और सुंदर कहते हैं। उनका अर्थ कब कोई बता न सके सिवाय बाप के। भगवान बाप जो बात सुनाते हैं, वह और कब कोई मनुष्य सुना न सकेंगे। चित्रों में स्वदर्शनचक्रधारी देवताओं को बना दिया है। बाप समझाते हैं मीठे-2 बच्चों स्वदर्शनचक्र की तो देवताओं को दरकार ही नहीं। वह क्या करेंगे शंख आदि? स्वदर्शनचक्रधारी तुम ब्राह्मण बच्चे हो। शंख ध्वनि भी तुमको करनी है। तुम जानते हो अभी विश्व में शांति कैसे स्थापन हो रही

है। साथ में चलन भी बड़ी अच्छी चाहिए। भक्तिमार्ग में भी तुम देवताओं के आगे अपनी चलन का वर्णन करते हो; परंतु देवताएँ कोई तुम्हारे चलन को सुधारते नहीं हैं। सुधारने वाला और है। वह शिवबाबा तो है निराकार। उनके आगे ऐसे नहीं कहेंगे आप सर्वगुण सम्पन्न हो..... शिव की महिमा ही अलग है। देवताओं की महिमा गाते हैं; परंतु हम ऐसे कैसे बनें? आत्मा ही पवित्र और अपवित्र बनती है ना। अभी तुम्हारी आत्मा पवित्र बन रही है। जब आत्मा सम्पूर्ण पावन बन जावेगी तो फिर यह पतित शरीर न रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे। यहाँ तो पावन शरीर हो न सके। पावन शरीर हो तब जब प्रकृति भी सतोप्रधान हो। नई दुनिया हर चीज़ सतोप्रधान होती है। 5 तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं। तत्व सभी तुम्हारे हुकुम में रहते हैं। दुःख की बात नहीं होती। यहाँ तो 5 तत्व भी तमोप्रधान होने कारण कितने उपद्रव आदि होते रहते हैं। तीर्थ यात्रा पर जाते हैं, कोई एक्सीडेंट हुआ, मर पड़ते। जल, पृथ्वी आदि कितना नुकसान करते हैं। यह सभी 5 तत्व भी नुकसान करते रहते हैं, तुम्हारे विनाश में मदद करते रहते हैं। अचानक बाढ़ आ जाती। तूफान लगते। यह है नेचरल ईश्वरीय आपदायें। वह बॉम्स आदि जो बनाते हैं वह सभी ड्रामा में नूँध है, उनको ईश्वरीय आपदायें नहीं कहेंगे। वह तो मनुष्यों की बनाई हुई है। अर्थक्वेक आदि मनुष्यों की बनाई हुई नहीं हैं। यह आपदायें सभी आपस में मिल(ते) हैं तब पृथ्वी से हलकाई होती है। तुम जानते हो कैसे बाबा हमको हल्का बनाकर और ले जाते हैं नई दुनिया में। हजाम लोग बाल उतारते हैं तो माथा हल्का हो जाता है। बाप भी एकदम हल्का कर देते हैं। सन्यासियों मिसल गुंजा नहीं करते, हल्का कर देते हैं। माथा हल्का होने से फुर्सत हो जाती है। तुमको बाप बिल्कुल हल्का कर देते हैं। सभी दुःख दूर हो जाते। अभी तुम सभी का माथा बहुत भारी हो गया है। फिर सभी हल्के, शांति, सुखी हो जावेंगे। जो जिस धर्म वाले हैं सभी को खुशी होनी चाहिए। बाप आया हुआ है सभी की सद्गति करने। तुमको पैगाम देना है बाप आये हैं एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने। जब पूरी स्थापना हो जाती है तब सभी धर्मों का विनाश हो जाता है। आगे तुम्हारी बुद्धि में यह ख्याल भी नहीं था। अभी समझते हो। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अभी बाकी अनेक धर्म विनाश। यह कर्तव्य एक बाप ही करते हैं। दूसरा कोई कर न सके सिवाय एक शिवबाबा के। ऐसा अलौकिक जन्म और अलौकिक कर्तव्य हो न सके। बाप है ऊँच ते ऊँच, उनका कर्तव्य भी बहुत ऊँच है। करन करावनहार है ना। तुम नॉलेज सुनाते हो। जानते हो बाबा आया हुआ है। इस सृष्टि भर से पापात्माओं का बोझ उतारने आये हैं। यह तो गायन भी है बाप आते हैं एक धर्म की स्थापना, अनेक धर्मों का विनाश करने। अभी तुमको कितना ऊँच महात्मा बना रहे हैं। महात्मा देवता बिगर कोई होता ही नहीं। यहाँ तो अनेकों को महात्मा कहते रहते हैं। वास्तव में महात्मा नाम है रांग। नर्क में फिर महात्मा कहाँ से आया? मनुष्यों को कुछ भी पता ही नहीं है। महात्मा कहा जाता है महान आत्मा को। रामराज्य कहा ही जाता है स्वर्ग को। वहाँ रावण राज्य ही नहीं। इसलिए इसको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। जितना सम्पूर्ण बनेंगे उतना ही बहुत समय सुख में रहेंगे। अपूर्ण तो इतना सुख पा न सकेंगे। स्कूल में भी कोई सम्पूर्ण, कोई अपूर्ण होते हैं। फर्क दिखाई पड़ता है। डॉक्टर तो डॉक्टर ही है ना; परंतु (उस)की पे देखो बहुत कम। कोई की जास्ती। वैसे ही देवता तो देवता ही हैं; परंतु मर्तबे का फर्क तो पड़ जाता है। बाप आकर तुमको ऊँच पढ़ाते हैं। कृष्ण को कब भगवान कह नहीं सकते हैं। कृष्ण को ही कहते हैं श्याम-सुन्दर। सांवरा भी कृष्ण दिखाते हैं। कृष्ण सांवरा थोड़े ही होता है। नाम-रूप तो बदल जाता है ना। सो भी आत्मा सांवरी बनती है। भिन्न नाम-रूप, देश-काल। अभी तुमको समझाया जाता है। तुम समझते हो हम बरोबर शुरू से लेकर कैसे पार्ट में आये हैं। पहले देवता थे। फिर देवता से असुर बने हैं। बाप ने 84 जन्मों का राज़ भी बताया है। जिसका और कोई को पता नहीं है। बाप ही आकर सभी राज़ समझाते हैं। बाप कहते हैं मेरे लाडले बच्चे तुम हमारे साथ घर में रहते थे। तुम भाई-2 थे ना। सभी आत्माएँ थे। शरीर नहीं था। बाप था और तुम बच्चे भाई-2 थे, और कोई

कोई सम्बंध नहीं था। बाप तो पुनर्जन्म में आते नहीं। वह तो ड्रामा अनुसार रिजर्व में रहते हैं। उनका पार्ट ही ऐसा है। तुमने कितना समय पुकारा है वह भी बाप ने बताया है। ऐसे नहीं द्वापर से पुकारना शुरू किया है। नहीं। बहुत समय के बाद तुमने पुकारना शुरू किया है। तुमको तो बाप बहुत ही सुखी बनाते हैं। अथाह सुख का वर्सा बाप दे रहे हैं। तुम भी कहते हो बाबा आपके पास कल्प-2 अनेक बार आये हैं। यह चक्र चलता ही रहता है। हर 5000 वर्ष बाद बाबा आपसे हम मिलते हैं। और यह वर्सा देते हैं। जो भी सभी देहधारी हैं सभी स्टुडेंट्स हैं। पढ़ाने वाला है विदेही। यह देह उनकी नहीं है। खुद विदेही है। यहाँ आकर देह धारण करते हैं। देह बिगर बच्चों को पढ़ावें कैसे? सभी रूहों का वह बाप है। भक्तिमार्ग में सभी उनको पुकारते हैं। बरोबर रुद्रमाला सिमरते भी हैं। ऊपर में है फूल और युगल मेरु। वह तो एक जैसे ही है। फूल को क्यों नमस्कार करते हैं? यह भी अभी तुमको पता पड़ा है कि माला कैसे फेरते हैं। देवताओं की फेरते हैं या तुम्हारी फेरते हैं? माला देवताओं की है या तुम्हारी? देवताओं की नहीं कहेंगे। यह ब्राह्मण ही हैं जिनको बाप बैठ पढ़ाते हैं। ब्राह्मण बन फिर देवता बन जाते हैं। अभी पढ़ते हो फिर वहाँ जाकर देवता पद पाते हो। माला तुम ब्राह्मणों की है, तो बाप द्वारा पढ़ कर मेहनत कर फिर देवता बनते हो। बलिहारी है तुम्हारे पढ़ाने वाले की। बाप ने बच्चों की कितनी सेवा की है। वहाँ तो कोई बाप को याद भी नहीं करते हैं। भक्तिमार्ग में तुम माला फेरते थे। अभी वह फूल आकर तुमको भी फूल बनाते हैं अर्थात् अपने माला का दाना बनाते हैं। तुम गुल-2 बनते हो ना। आत्मा का ज्ञान भी अभी तुमको मिलता है। सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। तुम्हारी ही महिमा है। तुम ब्राह्मण बैठ आप समान ब्राह्मण बनाकर फिर स्वर्गवासी देवी-देवता बनाते हो। देवताएँ तो स्वर्ग में रहते हैं। तुम जब देवता बन जाते हो, वहाँ तुमको पास्ट, प्रेजेंट, फ्युचर के नॉलेज नहीं होगी। अभी तुम ब्राह्मण बच्चों को पास्ट, प्रेजेंट, फ्युचर का ज्ञान मिलता है। और कोई को यह मिलता ही नहीं है। तुम बहुत-बहुत भाग्यशाली हो; परंतु माया फिर भी भुला देती है। तुमको कोई यह बाबा नहीं पढ़ाते हैं। यह तो मनुष्य हैं। यह भी पढ़ रहे हैं। यह तो सभी से लास्ट में था। सभी से नम्बरवन पतित, वही फिर नम्बरवन पावन बनते हैं। पतित दुनिया में सभी पतित मनुष्य ही हैं। पवित्र दुनिया में होते ही हैं सभी पवित्र। कितना सुखी होते हैं! एमऑबजेक्ट सामने खड़ी है। बाप कितना तुमको ऊँच बनाते हैं। आयुष्वान भव, पुत्रवान भव। यह भी सभी ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं मैं अगर बैठ आशीर्वाद दूँ तो फिर सभी को देता रहूँ। कोई को बच्चा नहीं होता है तो भी झगड़ा चल पड़ता है। कहेंगे पवित्र भल बनना; एक बच्चा तो दो। मित्र संबंधी भी कहते हैं अपना नसल तो छोड़ कर जाओ। बाप कहते हैं यह बिच्छू-टिण्डन का नसल क्या करेंगे? बच्चों का हाल तो देखो क्या बन जाते हैं! यह है ही तमोप्रधान दुनिया। श्री कृष्ण स्वर्ग का प्रिंस। उनपर भी गालियों का कितना वर्सा कर दिया है। बाप भी कहते हैं तुमने कितनी ग्लानि की है। सो भी अपनी और मेरी। यह भी ड्रामा में खेल है। पूज्य से पुजारी बनते हो, पुजारी बनने से आसुरी सम्प्रदाय बन जाते हैं। अभी है ही कलियुग। सभी घोर अंधियारे में हैं। तुम्हारे लिए है पुरुषोत्तम संगमयुग। अभी तुम रोशनी में हो। वह सभी हैं अंधियारे में। तुम्हारी बुद्धि में अभी सारा फर्क है। तुम जानते हो अभी हम नई दुनिया में जा रहे हैं। यह पुरानी दुनिया है। यह तो कोई भी कहेंगे तमोप्रधान दुनिया है। इनको कहते हैं विषय वैतरणी नदी। वैश्यालय। हम शिवालय के वासी थे। हाय हाय! रावण तुमने हमको वैश्यालय में डाल दिया। अभी तुमको मालूम पड़ा है यह खेल कैसा बना हुआ है। आधा कल्प हम शिवालय में, आधा कल्प हम वैश्यालय में रहते हैं। बाप कहते हैं तुम वैश्यालय में गिरते हो, तब भी तुम्हारे पास धन अथाह रहता है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह है ही 5000 वर्ष का ड्रामा। नई और पुरानी दुनिया की आयु भी ज़रूर चाहिए ना। मनुष्यों ने तो एकदम जैसे तवाई बना दिया है। शास्त्रों में क्या-2 ब....

लिखकर दी है। नाम रख दिया है व्यास भगवान ने बनाया। बहुत कहानियाँ बना दी हैं। कितने पुस्तकें हैं। वहाँ तो कोई पुस्तक की दरकार ही नहीं। न वेद-शास्त्र, उपनिषद आदि पढ़ने की ही दरकार है। इनसे कोई फायदा नहीं। यह भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ते-2 तुमने दुर्गति को पा लिया है। बाप कहते हैं मुझे भी पढ़ने की दरकार नहीं। मैं आता हूँ आकर सभी को सद्गति कर देता हूँ। यह तुम्हारी पढ़ाई कितनी ऊँच है। स्कूल में भी बच्चों क्या पढ़ाना है? भगवान पढ़ाते हैं तो फिर असुर से क्यों पढ़नी चाहिए। यहाँ से ही यह पढ़ाना शुरू कर दो। इन बच्चों के लिए तो और ही सहज हो जावेगा। छोटे-2 बच्चे बड़ों का भी नाम निकालेंगे। सभी वण्डर खावेंगे, यह तो भगवान के बच्चे हैं जो सद्गति का रास्ता बताते हैं। इसमें हिम्मत चाहिए। यह है ईश्वरीय पढ़ाई। वह है आसुरी पढ़ाई। पढ़ते-2 आधा में ही मर जाते हैं फिर भी शिवबाबा की याद में शरीर छोड़ेंगे। हो सकता है आयु भी बढ़ जाये। बूढ़ियों-2 को पढ़ाते हैं। तो छोटे बच्चे को क्यों नहीं पढ़ावेंगे। यह तो फूल है। यह तो अच्छा पढ़ सकते हैं। बच्चों का भी हक है। इनमें भी तो आत्मा है ना। पढ़ना तो आत्मा को है। तुम यही पढ़ाते रहो। घर-घर में माँ-बाप बैठ बच्चों को यही सिखाते रहें, तो उन्हों के लक्षण भी अच्छे हो जावेंगे। सभी के नहीं होंगे। कोई-2 तो ऐसे बच्चे होते हैं जो नाक में ही दम कर देते हैं। माया घेर लेती है। तो बात मत पूछो। सम्भालना ही मुश्किल हो जाता है। अनन्य बच्चे जानते हैं कैसे-2 नाक में दम करने वाले हैं। फिर कह देते हैं ड्रामा। ड्रामा के प्लैनअनुसार शिवबाबा मिला है। उनकी डायरैक्शन पर चलना है। मनुष्य तो कह देते हैं जो नसीब में होगा; परंतु नहीं हर बात में पुरुषार्थ करना पड़ता है। पुरुषार्थ बिगर प्रारब्ध कैसे मिलेगी? जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं वह ऊँच पद पाते हैं। कम पुरुषार्थ करने वाले तो कम पद ही पावेंगे। तुमको अभी पुरुषार्थ कराने वाला बेहद का बाप मिला है। वह कहते हैं तुमने मुझे बुलाया है ना हे पतित-पावन बाबा आकर हमको पावन बनाओ, तो अभी आया हूँ ना। फिर पावन बन जाते हो पावन दुनिया में। वहाँ तो फिर निमंत्रण भी नहीं देते हो, बाबा आप पावन दुनिया में भी आओ। सिर्फ पतित दुनिया में बुलाते हो। वह तुमको पावन बनाकर विश्व का मालिक बना देते हैं, फिर तो पूछते भी नहीं हो। यह खेल बड़ा ही वण्डरफुल है! यह भी जानते हो शिवबाबा कल्प-2 आते हैं, इन द्वारा तुमको बैठ पढ़ाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको डबल सिरताज बनाता हूँ। यह पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगी। कलियुग अंत में तो यह देवताएँ हैं ही नहीं, सतयुग आदि में हैं। तो वह कहाँ से आये? किसने बनाया? अभी तुम कैसे बन रहे हो यह भी समझ मिली है। फिर औरों को भी समझाना है। बहुतों का कल्याण करेंगे तो उन्हों की आशीर्वाद भी मिलेंगे। जितना सतोप्रधान बनने की पुरुषार्थ करेंगे तो खुशी भी बढ़ेगी। नम्बरवार तो होते ही हैं। सभी तो सतोप्रधान तक नहीं पहुँचेंगे। हिसाब-किताब सारा समझाया जाता है। इस समय सभी रावण के जेल में फँसे हुये हैं। कृष्ण की आत्मा भी इस समय रावण की जेल में थी ना। सभी रावण के कैद में हैं। बाप ने आकर अब निकाला है। वहाँ यह जंजीर आदि होते ही नहीं। तो बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं हूँ ही गरीब निवाज। गरीबों के पास ही आना होता है। जो बिल्कुल साहूकार थे वही बिल्कुल गरीब बन गये हैं। तो उनपर तरस पड़ता है। क्या थे, कैसे दिवाला मार दिया! फिर बाप कितना ऊँच बनाते हैं। अभी पुरुषार्थ करना पड़े। बाप को याद करो। कहते हैं मैं ही पतित-पावन हूँ। देहधारी तो पतित-पावन हो न सके। देवताओं को भी पतित-पावन कह न सके। अभी तुमको मालूम पड़ा है। तुमने ईश्वर का भी अंत पा लिया है। भक्ति मार्ग में तो कहते हैं वह बेअंत है। तुम्हारी गतमत तुम्हीं जानो। बाप ही आकर श्रीमत देते हैं। बाप खुद में मैं अपना सारा अंत देता हूँ। अभी तुम सभी कुछ जान गये हो। तुम जानते हो हम आत्माएँ बाबा के साथ घर में रहती हैं, फिर यहाँ आकर अपना-अपना पार्ट बजाने आये हैं। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।